

कामनी दृष्टि (१८६४ - १९७३)

उत्तरविदेश सत्राचीर महिला कविताओं मध्ये असलेले  
दोनदा रुचि कामनी दृष्टि, उत्तरविदेश सत्राचीर योग्य दिक्षा  
द्येहे नवीन कविता रुचा घावळू ठेण, विद्युप्रज्ञात शोधकाम  
पाविमित्राले नवीन तंत्र विद्यार्थ कवितांमध्ये विचारात घेणन;  
अर्द्धांशी विवित उक्त विद्यार्थालाई घेण, ग्राहिकात विद्युवंशी  
असमीर आविधी वाचिते हये नवीन झुक्ते शहितामात्र नये,  
सिद्धित ज्ञानामात्रावडे प्रदृश्ये ग्राहन नाते ठेण्ठेण; नवीन  
प्रगतीलीला प्रातिष्ठान, ग्राहनालन प्रातिष्ठान यादेव घुक्त ठेणन।  
इंद्रदेवी लिखाऱ्य आविधी द्येहे नवीन इंद्रदेवी लिखित द्वारा  
प्रातिष्ठान यादु वडे वासनीवर विद्युती गीतीवराणी रुचा क्षेवन; तंत्र  
'वेदानातिकी' (१८७१), 'वाल्मीकिमर्त्त्य' (१९१३), 'ग्राहकप्रथीत'  
(१९१४) असुलित ग्रन्थांमध्ये उल्लेखाद्यात, अद्युल-बैज्ञानिक प्रातिष्ठान  
तंत्र उनेहे कविता वासनावर लिंगामवासनात ठेण्ठेण ठेणन। यावे  
कामनी दृष्टि वर्षप्रथम द्येहेपूर्व कविता हेहे उदारत्व असुलेली  
प्रातिष्ठान ठेण्ठेण; नवीन नवीन विचार विचारे कविता  
लिख्ये प्रातिष्ठान विचारात ठेण्ठेण्ठेण, अस, प्रातिष्ठान असुलेली  
— यावे नवीन नवीन तंत्र कविता प्रातिष्ठान; तंत्र ग्रन्थी ग्रन्थीवरानुवड  
घेणहे।

कामनी दृष्टि कवितांमध्ये ग्राहनामात्र मध्ये द्येहे तंत्र  
कवितातील असुलेली द्येहे येते आहेत, 'ग्राहन ओ दृष्टि' (१८६५)  
ज्ञानी रुचायांती इस्त्रेवे नवीन वासनावराणी अवृत्त  
असुलेलीन, यावे आहे येहे ग्रन्थातील वासनावराणी आहे, तर वार्षी  
एवढी द्येहेव अस अन्त वासनावराणी आहे, 'अन्ती वृथा' कविता  
द्येहेव चम्पाशास्त्र प्रकाश द्येहेहे —

"कौन असुलेली कवी, कौन विद्यार्थी वृथा,  
कृत्तित दृष्टिन अवृत्त वासनामात्र मध्ये,

2

ପ୍ରାଚୀ ଶିଳ୍ପ ଏକାଡେମୀ ବାର୍ଷିକୋଷ ଅନୁଷ୍ଠାନିକ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରକାଶି

କେବେ ଦୁଇ ଲିଙ୍କ ମାତ୍ର ହୋଇଥିଲା ? ”

କେବେ ହୁଏ ପାଇବାର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ କଣ ?

“ஏனு? ”

"3" 1

“କେବଳମା—ଏହି ?”

“ କାହାରୁ ! ”

"मेरी गलती?"

“ମୁଁ କାହାର, ମୁଁ କାହାର—

ମେଲିବାରୀର ପୁଣ୍ଡ ଏବଂ ଗୋଟିଏକା,

ପ୍ରେସ୍ କାମକାଳୀଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଦର୍ଶକ ଦର୍ଶନ ଦିଲ୍ଲିରେ ଆଜିର ଅଧିକାରୀଙ୍କ ମଧ୍ୟ ଉପରେ ଥିଲା ।

ଗୋଟିଏ କଣ୍ଠ ନାହିଁ ରାଜମାନ, ଦେଶ-କୁଳର ଅନ୍ତର ସଦିକ୍  
ପ୍ରେସ୍‌ର କଣ୍ଠ ନାହିଁ ରାଜମାନ, ଦେଶ-କୁଳର ଅନ୍ତର ସଦିକ୍  
ପ୍ରେସ୍‌ର କଣ୍ଠ ନାହିଁ ରାଜମାନ ଓ ମହିଳା କୁଳର ଅନ୍ତର ସଦିକ୍  
ଲେଖି ‘ନିଷଫ୍ଟାର୍’ କବିତା ।

“କୁମି ପାତି କୁମି ଅଛୁ, ମନ, ଯାଏ ଯାଏ  
ଅଣିଲି ରେମାନ୍ ହାତୁ, ଦଳ’ ଘନି ଥାଏ,  
ଏହି ଶମନୀର ଯାନ, ଯାହା, ପିତୃତମ  
ରେମାନ୍ ଚକ୍ରାନ୍ ପାତୁ ଲୁହାଟେ କରାଯା ।”

ଜାନକିବନେ ଦୁଇ ଅମ୍ବଳେ ମାଟେଣା ଏହାରେ କିମ୍ବା  
କିମ୍ବା ଅବଶ୍ୟକ ଏହାରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

(၁)

ଆକେ କ୍ରେମାରିତ ମନୀ, ଆ ପଞ୍ଚ ଅଟେ । କେବଳ ଲୋଗାଦିଟି ଯାଇଲା  
ଲାଗିଥିଲା ହେଉ କେବେଳା । ଅଭିଭାବ କ୍ରେମା ଶିଖନ ଯେଣେ ଯାଇ ହାତାରୁ କ୍ରେମା  
ହେଲେ ନାହିଁ ଲାଗି ଛାଡ଼ି ଦେବ, ଅଭିଭାବ ଯେବେଳା । ଲୋଗା  
ବିଷୟରେ ବିଷୟ ମୁଢ଼ କେବଳା କ୍ରେମା ହବାର କର୍ଯ୍ୟ କରିପରିବିଲା ।  
ଅଭିଭାବ କ୍ରେମା ଛାଡ଼ିଲେ । ତାର ଜୀବତର ସମ୍ପଦକ୍ଷେତ୍ରେ ଅଭି  
ଭାବ ନାହିଁ, ରାଜନୀତିର କ୍ଷମି ଆହୁତି ଯେଠା କ୍ଷମି କ୍ଷମି ଲାଗି  
ଦୟା ଦୟା ହେଲା ନା, ମନାରୁ ଯେଠା ପୋର ଆହୁତି ହେଲା ଯେଠା ଲାଗିଲା  
କମ୍ବ ହେଲା । ତୁମେ କ୍ରେମା ଅଭିଭାବ କ୍ରେମା ଓ ବିଷୟକ୍ରେମା  
କମ୍ବ ହେଲା । ତୁମେ କ୍ରେମା ଅଭିଭାବ କ୍ରେମା କରିପାରୁ ତୁମେ କମ୍ବ  
ଅଭିଭାବ କ୍ରେମା କରିପାରୁ ।